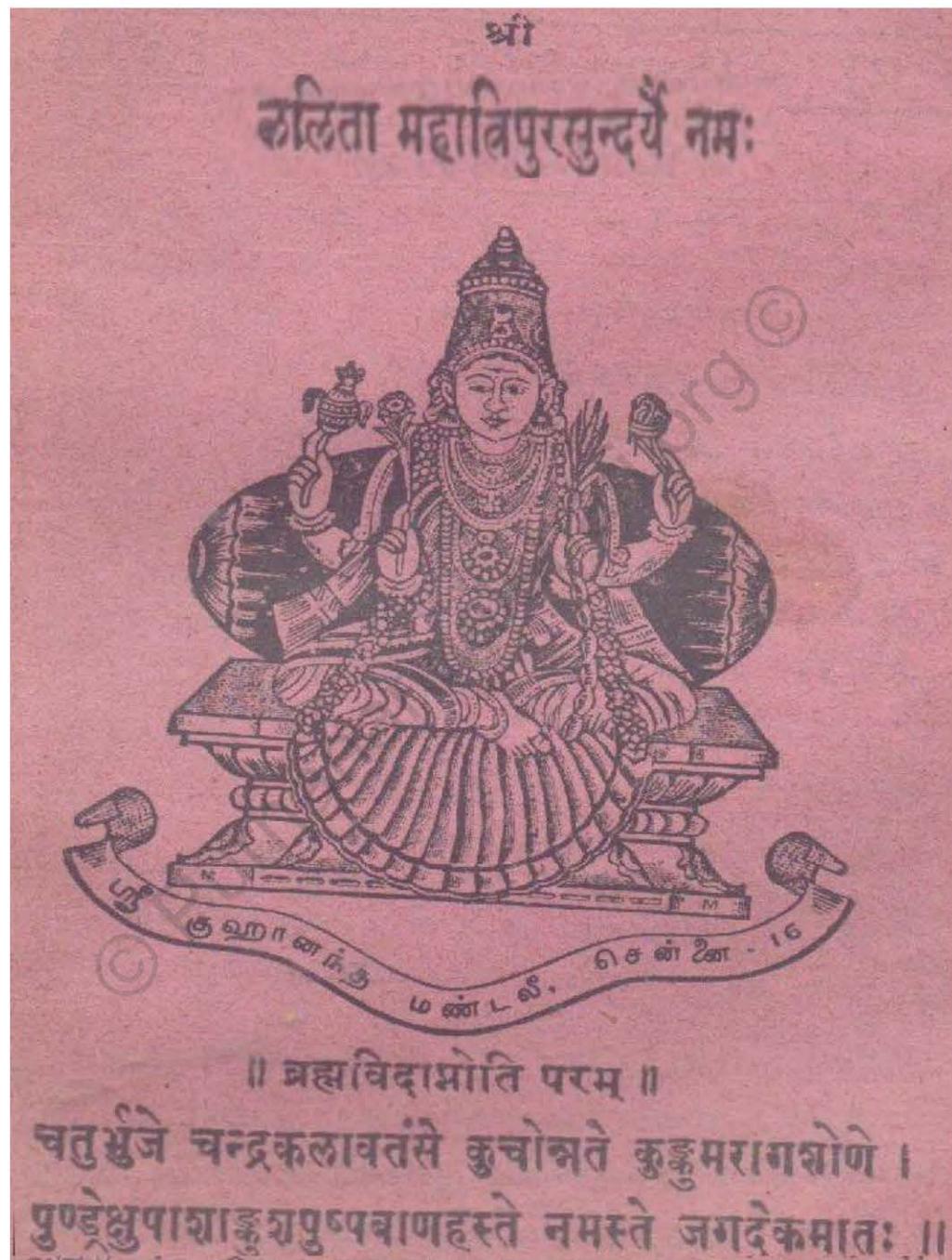


# पूर्ण आनन्द लहरि



पृष्ठ: - ३

FEB 2016 – MAR 2016

दलं - १२

ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ।  
ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ந குரோரதிக் ॥



தெளிவு குருவின் திருமேனி காண்டல்  
தெளிவு குருவின் திருநாமம் செப்பல்  
தெளிவு குருவின் திருவார்த்தை கேட்டல்  
தெளிவு குருவுரு சிந்தித்தல் தானே!



**vimalA (crown of sati)**

## Table of Contents:

| #  | Topics                          | Page |
|----|---------------------------------|------|
| 1  | Introduction                    | 5    |
| 2  | Devi AshtAngam                  | 7    |
| 3  | dhAraNa vidhi nirUpaNam         | 10   |
| 4  | dhyAna shlOka – gAyatri         | 14   |
| 5  | Laghu shyAmA mantra japa kramA  | 18   |
| 6  | Laghu shyAmA AvaraNa pUjA kramA | 22   |
| 7  | vAgvAdinI mantra japa kramA     | 39   |
| 8  | vAgvAdinI AvaraNa pUjA kramA    | 42   |
| 9  | nakull mantra japa karmA        | 51   |
| 10 | nakull AvaraNa pUjA kramA       | 55   |
| 11 | vimalA – Shakti plThA           | 66   |
| 12 | durgA shata nAmA aShTOttaram    | 71   |
| 13 | sadAvidyA anusaMhatiH           | 74   |

॥ शिवादि श्री गुरुभ्यो नमः ॥

## Introduction

In the last issue, we looked at the pratyAhAra vidhinirUpaNam from sUta saMhitA. In this issue we bring the dhAraNA vidhinirUpaNam from aShTANgayOga. In this chapter, shri sUtA explains the various types of dhAraNA for the benefit of the sAdhAkAs . The various benefits of performing pratyAhArA on a regular basis is clearly provided and the very fact that jnana and mukti as the end goal for this is stated in very clear terms.

The mAtingI navarAthri falls during this month and for the benefit of the upAsakAs, the mAtingI anga and upAnga dEvatAs mantra japa kramA and AvaraNa pUjA kramAs are provided in this issue.

In addition, Durga shata nAma stOtram is included in this issue so that the readers have the opportunity to chant this shloka on March 8 (AmavasyA falling on a Tuesday with shatabhishA nakshatra) as per the phalashruti –

भौमावासिन्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषाङ्गंते ।  
विलिख्य प्रपठेत्स्तोत्रं स भवेत्सम्पदां पदम् ॥

My mother, **Srimathi bhAnumati** merged with lalitAmbA on Feb 3, 2016 in Chennai. She was an upAsaki who has completed purascharaNa of bAlA tripurasundari. She was an advanced upAsaki who propelled ahead by the practice of nyAsAs. She used to interact with bAlAmbA and for those who have seen this can understand the anyOnya bhava she enjoyed with bAlAmbA. She was also a thlvra bhaktA of shri kAncl kAmakOti mahAperiyavA – thus attaining the feet of mahAtripurasundarl on the anushaM day. The photo below is of my mother bringing the pAdukA of shri mahAperiyavA to my home chanting “jaya jaya shankara” on the auspicious day of guru pUrNimA while performing ShaDaNvayA shAmbhava pUjA.



She was a vivid reader and was always one of the first to read pUrNanandalahari and provide her comments. Like clock work she would follow her anuShTANAs prescribed by her Guru. As a son, her loss is a big void for me but as a saha upAsakA I understand there is no death for an AtmA. As a sincere upAsakI, her destination was always sripurAm and mOkshAnusantAnam was her everyday life. I am blessed to have had such a great soul as my mother and as LalitA, I am sure She will continue to guide me.

We thank Shrl yOgAmbA samEta AtmAnandanAthA (Shri Ramesh Kutticad) for authoring the Q&A section and also contributing the dhyAna shloka meaning.

Lalithai vEdam sarvam.

Surrendering to the holy pAdukAs of Shri Guru,

प्रकाशाम्बा समेत प्रकाशनन्दनाथ

## देवी मान अष्टाङ्गम

श्री आदिगुरोः परशिवस्य आज्ञया प्रवर्तमान देवीमानेन षड्क्रिंशत् तत्वात्मक सकल प्रपञ्च सृष्टि स्थिति संहार तिरोधान अनुग्रह कारिण्याः पराशक्तेः ऊर्ध्व भूविभ्रमे नं घ्राण तत्व महाकल्पे दं चक्षुस्तत्व कल्पे थं त्वक् तत्व महायुगे खं सदाशिव तत्व युगे दं चक्षु तत्व परिवृत्तौ घं सुब्द्विद्या तत्व वर्षे – श्री ललितात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका प्रसादसिद्ध्यर्थे यथा शक्ति (जप क्रम) सपर्याक्रमम् निर्वतयिष्ये ।

|               | FEB 7            | FEB 8          | FEB 9         | FEB 10           |
|---------------|------------------|----------------|---------------|------------------|
| मासे          | ऐं श्री          | ऐं श्री        | ऐं श्री       | ऐं श्री          |
| तत्व दिवसे    | नं घ्राण         | पं वाक्        | फं पाणि       | बं पाद           |
| दिन नित्यायां | लं नित्या        | लूं कुलसुन्दरि | ऋं त्वरिता    | ऋं शिवदूति       |
| वासरे         | आनन्दानन्दनाथ    | ज्ञानानन्दनाथ  | सत्यानन्दनाथ  | पूर्णानन्दनाथ    |
| घटिकोदये      | अ – कार          | ए – कार        | च – कार       | त – कार          |
|               | FEB 11           | FEB 12         | FEB 13        | FEB 14           |
| मासे          | ऐं श्री          | ऐं श्री        | ऐं श्री       | ऐं श्री          |
| तत्व दिवसे    | भं पायु          | मं उपस्थ       | यं शब्द       | रं स्पर्श        |
| दिन नित्यायां | ऊं वज्रेश्वरि    | उं वहिवासिनि   | ईं भैरुण्डा   | इं नित्यक्लिन्ना |
| वासरे         | स्वभावाभानन्दनाथ | प्रतिभानन्दनाथ | सुभगानन्दनाथ  | प्रकाशानन्दनाथ   |
| घटिकोदये      | य – कार          | अ – कार        | ए – कार       | च – कार          |
|               | FEB 15           | FEB 16         | FEB 17        | FEB 18           |
| मासे          | ऐं श्री          | ऐं श्री        | ऐं श्री       | ऐं श्री          |
| तत्व दिवसे    | लं रूप           | वं रस          | शं गन्ध       | षं आकाश          |
| दिन नित्यायां | आं भगमालिनि      | अं कामेश्वरी   | अं कामेश्वरी  | आं भगमालिनि      |
| वासरे         | विमर्शानन्दनाथ   | आनन्दानन्दनाथ  | ज्ञानानन्दनाथ | सत्यानन्दनाथ     |
| घटिकोदये      | त – कार          | य – कार        | अ – कार       | ए – कार          |

|               | FEB 19           | FEB 20           | FEB 21           | FEB 22           |
|---------------|------------------|------------------|------------------|------------------|
| मासे          | ऐं श्री          | ऐं श्री          | ऐं श्री          | ऐं श्री          |
| तत्व दिवसे    | सं वायु          | हं वहि           | ळं जल            | क्षं पृथिवी      |
| दिन नित्यायां | इं नित्यक्लिन्ना | ईं भैरुण्डा      | उं वहिवासिनि     | ऊं वज्रेश्वरि    |
| वासरे         | पूर्णनिन्दनाथ    | स्वभावाभानन्दनाथ | प्रतिभानन्दनाथ   | सुभगानन्दनाथ     |
| घटिकोदये      | च - कार          | त - कार          | य - कार          | अ - कार          |
|               | FEB 23           | FEB 24           | FEB 25           | FEB 26           |
| मासे          | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        |
| तत्व दिवसे    | अं शिव           | कं शक्ति         | खं सदाशिव        | गं ईश्वर         |
| दिन नित्यायां | ऋं शिवदूति       | ऋं त्वरिता       | लृं कुलसुन्दरि   | लृं नित्या       |
| वासरे         | प्रकाशानन्दनाथ   | विमर्शानन्दनाथ   | आनन्दानन्दनाथ    | ज्ञानानन्दनाथ    |
| घटिकोदये      | ए - कार          | च - कार          | त - कार          | य - कार          |
|               | FEB 27           | FEB 28           | FEB 29           | MAR 1            |
| मासे          | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        |
| तत्व दिवसे    | घं सुद्धविध्या   | डं माया          | चं कला           | छं अविद्या       |
| दिन नित्यायां | एं नीलपताका      | ऐं विजया         | ओं सर्वमङ्गला    | ओं ज्वालामालिनि  |
| वासरे         | सत्यानन्दनाथ     | पूर्णनिन्दनाथ    | स्वभावाभानन्दनाथ | प्रतिभानन्दनाथ   |
| घटिकोदये      | अ - कार          | ए - कार          | च - कार          | त - कार          |
|               | MAR 2            | MAR 3            | MAR 4            | MAR 5            |
| मासे          | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        |
| तत्व दिवसे    | जं राग           | झं काल           | जं नियति         | टं पुरुष         |
| दिन नित्यायां | अं चित्रा        | अं चित्रा        | ओं ज्वालामालिनि  | ओं सर्वमङ्गला    |
| वासरे         | सुभगानन्दनाथ     | प्रकाशानन्दनाथ   | विमर्शानन्दनाथ   | आनन्दानन्दनाथ    |
| घटिकोदये      | य - कार          | अ - कार          | ए - कार          | च - कार          |
|               | MAR 6            | MAR 7            | MAR 8            | MAR 9            |
| मासे          | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        | ओं प्रीति        |
| तत्व दिवसे    | ठं पकृति         | डं अहंकार        | ढं बुद्धि        | णं मनस्          |
| दिन नित्यायां | ऐं विजया         | एं नीलपताका      | लृं नित्या       | लृं कुलसुन्दरि   |
| वासरे         | ज्ञानानन्दनाथ    | सत्यानन्दनाथ     | पूर्णनिन्दनाथ    | स्वभावाभानन्दनाथ |
| घटिकोदये      | त - कार          | य - कार          | अ - कार          | ए - कार          |

### पर्वा दिनेभ्यः

|                | America     | India       |
|----------------|-------------|-------------|
| अमावास्या      | 8 Feb 2016  | 8 Feb 2016  |
| मास सङ्करान्ति | 13 Feb 2016 | 13 Feb 2016 |
| पूर्णिमा       | 21 Feb 2016 | 22 Feb 2016 |
| कृष्ण अष्टमि   | 1 Mar 2016  | 1 Mar 2016  |
| कृष्ण चतुर्दशि | 7 Mar 2016  | 8 Mar 2016  |
| अमवास्या       | 8 Mar 2016  | 9 Mar 2016  |

### अन्य पूजा दिनेभ्यः

|               | America     | India       |
|---------------|-------------|-------------|
| शुक्ल चतुर्थि | 11 Feb 2016 | 12 Feb 2016 |
| कृष्ण चतुर्थि | 26 Feb 2016 | 26 Feb 2016 |

### विशेष पर्वा दिनेभ्यः

|                        | America     | India       |
|------------------------|-------------|-------------|
| Magha Navaratri begins | 8 Feb 2016  | 8 Feb 2016  |
| Navarathri ends        | 17 Feb 2016 | 17 Feb 2016 |
| Ratha Sapthami         | 14 Feb 2016 | 14 Feb 2016 |
| Bhishma Ekadashi       | 18 Feb 2016 | 18 Feb 2016 |
| Maha Shivarathri       | 7 Mar 2016  | 7 Mar 2016  |

## श्री सूत सम्हिता

### धारण विधि निरूपणम्

ईश्वर उवाच –

IshvarA says -

अथातः संप्रवक्ष्यामि धारणाः पञ्च सुव्रतः ।  
देहमध्यगते व्योम्नि बाह्याकाशां तु धारयेत् ॥ १

I will now explain about the five types of DharanA's, Oh! Muni! Visualize the external AkAshA and focus that on the space located on the center of our heart.

प्राणे बाह्यानिलं तद्वज्जलने चाग्निमौद्रे ।  
तोयं तोयांशके भूमिं भूमिभागे महामुने ॥ २

Similarly, Oh mahAmuni! Visualize the external fire and focus that on the prANA; Visualize the external fire and focus that on the fire inside the stomach; Visualize the external water and focus that on the water inside that body; and visualize the external earth on the earth part of the body.

हयरवलकाराख्यं मन्त्रमुच्चारयेत्क्रमात् ।  
धारणैषा मया प्रोक्ता सर्वपापविशोधिनी ॥ ३

Chanting the mantra ha-ya-ra-va-la and focusing on the areas as prescribed above is described as dhArANA by me which results in removing all possible sins.

जान्वन्तः पृथिवीभागो ह्यपां पाथन्त उच्यते ।  
हृदयान्तस्तथाऽन्यंशो भूमध्यान्तोऽनिलांशकः ॥ ४

The earth portion of a human body is between the knee and the foot. The water portion is between knee and the gudam. The fire portion is between the gudam and the heart . The air portion is between heart and the area between eye brows.

आकाशान्तस्तथा प्राज्ञ मूर्धन्तः परिकीर्तिः ।  
ब्रह्माणं पृथिवीभागे विष्णुं तोयांशके तथा ॥ ५

Similarly, the space portion of the body is focused between the AjnA and the mUrdhni (crown). BrahmA is focused on the earth portion; viShNu is on the water portion.

अग्न्यंशे च महेशानमीश्वरं चानिलांशके ।  
आकाशांशे महाप्राज्ञ धारयेत् सदाशिवम् ॥ ६

MahEshvarA is focused on the Fire portion; IshvarA is focused on the air portion and sadAshivA is focused on the AkAshA portion.

अथवा तव वक्ष्यामि धारणां मुनिपुङ्ग्वं ।  
मनसिन्दुं दिशः श्रेत्रे क्रान्ते विष्णुं बले हरिम् । ७

Let me now explain the next type of DhAraNA Oh Muni! Focus Indu (Moon) on the manas (mind); Focus the digdEvatAs (10 direction lords) on the ears; Focus ViShNU on the walk; Focus Hari in the bala (shoulders);

वाच्यग्निं मित्रमुत्सर्गं तथोपस्थे प्रजापतिम् ।  
त्वचि वायुं तथा नेत्रे सूर्यमूर्ति तथैव च ॥ ८

Focus Agni on the speech; Focus yamA on the gudA; Focus prajApati on the genital; Focus Vayu on the touch; Focus sUryA on the eyes;

जिह्वायां वरुणं घ्राणे भूमिदेवीं तथैव च ।  
पुरुषे सर्वशास्तारं बोधानन्दमयं शिवम् ॥ ९

Focus varUnA on the tongue; Focus bhUmidEvi on the nose; Focus the all knower, ever blissful ShivA on the puruShA;

धारयेद्गुद्धिमान्तिर्यं सर्वपापविशुद्धये ।  
एषा च धारणा प्रोक्ता योगशास्त्रार्थवेदिभिः ॥ १०

Doing this (as prescribed above) intense focus by intellects everyday will remove all sins. This practice is called by yAga shAstrA as dhAraNA.

ब्रह्मादिकार्यरूपाणि स्वे स्वे संहत्य कारणे ।  
सर्वकारणमव्यक्तमनिरूप्यमचेतनम् ॥ ११

The causal forms like brahmA should be merged into our own causal extensions. Further, that which is the cause for everything, that which cannot be proved; the unmanifested without any divided consciousness

साक्षादात्मनि संपूर्णे धारयेत्प्रयत्नो नरः ।  
धारणैषा परा प्रोक्ता धार्मिकैर्वदपारगैः ॥ १२

should be attempted by effort by men to completely focused into verily the Atman itself. Those who have mastered the vEdAs call this the best dhAraNA.

इन्द्रियाणि समाहत्य मनसाऽत्मनि धारयेत् ।  
कंचित्कालं महाप्राज्ञ धारणैषा च पूजिता ॥ १३

Internally drawing the senses and focusing the mind on the AtmA for sometime is considered by masters as the greatest dhAraNA.

वेदादेव सदादेवा वेदादेव सदा नरः ।  
वेदादेव सदा लोका वेदादेव महेश्वरः ॥ १४

Only because of vEdAs did dEvAs; Only because of vEdAs did humans; Only because of vEdAs did IOkAs; Only because of vEdAs did mahEshvarA were created

इति चित्तव्यवस्था या धारणा सा प्रकीर्तिता ।  
ब्रह्मैवाहं सदा नाहं देवो यक्षोऽथवा नरः ॥ १५

Thus that contemplates is called dhAraNA. I am always brahmaM – not a dEvA; not a yakShA; not a human

न देहेन्द्रियबुद्ध्यादिर्न माया नान्यदेवता ।  
इति बुद्धिं व्यवस्थाऽपि धारणा सेति हि श्रुतिः ॥ १६

Not the body; not the senses; not the intellect; not the mAyA; not any dEvatA. Thus that contemplates is also called dhArANA by the shrutIs.

सर्वं संक्षेपतः प्रोक्तं सर्वशास्त्रं विशारद ।  
आगमान्तैकसंसिद्धमास्थेयं भवता सदा ॥ १७

Everything was explained briefly. You should remain in the siddhi of this knowledge (that stands on the pillars of vEdAntA).

## dhyAna shloka meaning

### GAYATHRI



मुक्ता-विद्रुम-हेम-नील-धवळ-छायैः मुखैः त्रीक्षणौः युक्तां  
 इन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकुटां तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकां ।  
 गायत्रीं वरदाभय-अङ्कुश-कशाः शुभ्रं-कपालं-गुणं  
 शङ्खं-चक्रं-अथ-अरविन्द-युगळं हस्तैः वहन्तीं भजे ॥

मुक्ता-Pearl (silvery shining white)

विद्रुम - Coral (sparkling red)

हेम - Gold (glittering yellow)

नील Blue sapphire (deep blue)

धवळ-छायैः White (pure white)

मुखैः Faces (with the above colors - five)

त्रीक्षणौः युक्तां with three eyes

इन्दु-निबद्ध-रत्न-मुकुटां wearing a ruby studded diadem having a crescent on it

तत्त्वार्थ-वर्णात्मिकां having syllables as that of the tattvas - twenty four

गायत्रीं Devi Gayatri

वरदाभय (Showing) gestures of giving boons and dispelling fears

अङ्कुश Goad

कशाः Whip

शुभ्रं-कपालं White skull

गुणं trident

शङ्खं Conch

चक्रं Discus

अथ-अरविन्द-युगळं two lotus flowers

वहन्तीं holding (in her)

हस्तैः hands

भजे (I) worship.

The deity of this mantra is Savita- One who creates, The deity who is in the Sun, however the first word 'tat' has been interpreted as to mean Lord Shiva, Vishnu, Brahma, Devi. It is amazing to note that the above dhyana sloka encompasses all these deities into a form.

The two lotus will point to Lord Surya, the Skull and trident to Lord Shiva, the Conch and discus to Lord Vishnu, the goad and whip to SriVidya devi Lalita and the gestures to Lord Brahma.

The colour of faces too are in agreement to the above idea, blue is Lord Vishnu, Golden is Lord Shiva, Red is Lord Surya, Slivery white to Sri Vidya devi - even vice-versa of Surya and Devi can be in agreement and finally Pure white to Lord Brahma.



श्री लघुश्यामलाम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः

## श्री लघुश्यामलाम्बा मन्त्र जप क्रमः

अस्य श्री लघु श्यामा महामन्त्रस्य ।

मतङ्गं ऋषिः

विराट् छन्दः ।

श्री लघुश्यामा देवता ।

ऐं बीजं । स्वाहा शक्तिः । मातङ्गी कीलकं ।

श्री लघु श्यामा महा मन्त्र प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

| करन्यासं                        | अङ्गन्यासं                         |
|---------------------------------|------------------------------------|
| ऐं नमः अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।     | ऐं नमः हृदयाय नमः ।                |
| उच्छिष्ट तर्जनीभ्यां नमः ।      | उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा ।            |
| चाणडालि मध्यमाभ्यां नमः ।       | चाणडालि शिखायै वषट् ।              |
| मातङ्गि अनामिकाभ्यां नमः ।      | मातङ्गि कवचाय हुं ।                |
| सर्व वशङ्करि कनिष्ठाभ्यां नमः । | सर्व वशङ्करि नेत्रन्त्रयाय वौषट् । |
| स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः ।  | स्वाहा अस्त्राय फट् ।              |

ॐ भूर्भुवस्वरोऽइति दिग्बन्धः

ध्यानम्

स्मरेत् प्रथमपुष्पिणीं रुधिरबिन्धुशोणाम्बरां  
गृहितमधुपात्रिकां मदविधूर्णनेत्राञ्चलाम् ।  
घनस्तनभरालसां गळितचूळिकां श्यामलां  
करस्फुरितवल्लकीविमलशङ्खताटङ्किनीम् ॥

## अन्य ध्यानम्

माणिक्याभरणान्वितां स्मितमुखीं नीलोत्पलाभाष्वरां  
रस्यालक्तकलिप्तपादकमलां नेत्रन्योल्लासिनीम् ।  
वीणावादनतत्परां सुरनतां कीरच्छदश्यामलां  
मातङ्गीं, शशिशेखरामनुभजेत्ताम्बूलपूर्णनिनाम् ॥

## पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्धं कल्पायामि ।  
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।  
यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।  
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।  
वं अमृतात्मिकायै अमृतं कल्पायामि ।  
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्त राजोपचारान् कल्पायामि ।

## मूल मन्त्रः

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा ।  
ऐं शुक प्रियायै विद्धहे क्लीं कामेश्वरि धीमहि तनः श्यामा प्रचोदयात् ।

## अङ्गन्यासं

ऐं नमः हृदयाय नमः ।  
उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा ।  
चाण्डालि शिखायै वषट् ।  
मातङ्गि कवचाय हुं ।  
सर्व वशङ्करि नेत्रनयाय वौषट् ।  
स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ॐ भूर्भुवसुवरोँ इति दिग्विमोगः ।

## ध्यानम्

स्मरेत् प्रथमपुष्पिणीं रुधिरबिन्धुशोणाम्बरां  
गृहितमधुपात्रिकां मदविधूर्णनेत्राज्जलाम् ।  
घनस्तनभरालसां गळितचूळिकां श्यामलां  
करस्फुरितवल्लकीविमलशङ्खताटङ्किनीम् ॥

## पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्थं कल्पायामि ।  
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।  
यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।  
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।  
वं अमृतात्मिकायै अमृतं कल्पायामि ।  
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्त राजोपचारान् कल्पायामि ।



श्री लघुश्यामलाम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः

## श्री लघुश्यामलान्बा आवरण पूजा क्रमः

### पीठ पूजा

मण्डूकादि परतत्वाय नमः ।

ऐं क्लीं सौः विभूत्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः उन्नत्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः कान्त्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः सृष्ट्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः कीर्त्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः सन्नत्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः व्युष्ट्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः उत्कृष्ट्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः ऋद्ध्यै नमः ।

ॐ ऋद्ध्यै लघुश्यामाय नमः ।  
 ॐ ह्रीं सर्वशक्ति कमलासनाय नमः ।

### मन्त्र वर्ण न्यासः

ॐ ऐं नमः - दक्षांसे  
 ॐ नं नमः - दक्षकूर्पे  
 ॐ मं नमः - दक्षमणिबन्धे  
 ॐ उं नमः - दक्षाङ्गुलिमूले  
 ॐ च्छिं नमः - दक्षाङ्गुल्यग्रे  
 ॐ षं नमः - वामांसे

ॐ चां नमः - वामकूर्पे  
ॐ डां नमः - वाममणिबन्धे  
ॐ लिं नमः - वामाङ्गुलिमूले  
ॐ मां नमः - वामाङ्गुल्यग्रे  
ॐ तं नमः - दक्षपादमूले  
ॐ गिं नमः - दक्षजङ्घायां  
ॐ सं नमः - दक्षगुल्फे  
ॐ र्वं नमः - दक्षपादाङ्गुल्यग्रे  
ॐ वं नमः - दक्षपादाङ्गुलिमूले  
ॐ शं नमः - वामपादमूले  
ॐ कं नमः - वामजङ्घायां  
ॐ रिं नमः - वामगुल्फे  
ॐ स्वां नमः - वामपादाङ्गुल्यग्रे  
ॐ हां नमः - वामपादाङ्गुलिमूले



## श्री लघुश्यामलाम्बा आवाहनम् -

स्मरेत् प्रथमपुष्पिणीं रुधिरबिन्धुशोणाम्बरां  
गृहितमधुपात्रिकां मदविधूर्णनेत्राज्यलाम् ।  
घनस्तनभरालसां गळितचूळिकां श्यामलां  
करस्फुरितवल्लकीविमलशङ्खताटङ्किनीम् ॥

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बायै नमः ।

- आवाहितो भव । - आवहन मुद्रां प्रदर्शय

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बायै नमः ।

- स्थापितो भव । - स्थापण मुद्रां प्रदर्शय

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बायै नमः ।

- संस्थितो भव । - संस्थितो मुद्रां प्रदर्शय

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बायै नमः ।

- सन्निरुद्धो भव । - सन्निरुद्ध मुद्रां प्रदर्शय

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बायै नमः ।

- सम्मुखी भव । - सम्मुखी मुद्रां प्रदर्शय

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बायै नमः ।

- अवकुण्ठितो भव । - अवकुण्डनमुद्रां प्रदर्शय

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां  
पूजयामि तर्पयामि नमः ।- वन्दन देनु योनि मुद्रांश्च प्रदर्शय

यथा शक्ति षोडश उपचार पूजा पञ्चोपचार पूजा वा कुरुत । वन्दन धेनु योनि मुद्रांश्च प्रदर्श्य ।

(Do Shodasa upacara puja or panchopacara depending on the time and convenience)

### षडङ्ग तर्पणम् –

ऐं नमः हृदयाय नमः । हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा । शिरो शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
चाण्डालि शिखायै वषट् । शिखायै शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
मातङ्गि कवचाय हुं । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
सर्ववशङ्करि नेत्रन्त्रयाय वौषट् । नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

### लयाङ्ग तर्पणम् –

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (१० वारम्)



## प्रथमावरणम्

ॐ ऐं रत्यै नमः । रति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं प्रीत्यै नमः । प्रीति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्लीं मनोभवायै नमः । मनोभवा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः प्रथमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां  
पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पये तु भ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

अनेन प्रथमावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

## द्वितीयावरणम्

ॐ ऐं इच्छशक्त्यै नमः । इच्छा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ ह्रीं ज्ञानशक्त्यै नमः । ज्ञान शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्लीं क्रियाशक्त्यै नमः । क्रिया शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः द्वितीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां  
पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

अनेन द्वितीयावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

### तृतीयावरणम्

ॐ द्रां द्रावण बाणाय नमः । द्रावण बाण श्री पादुकां पूजयांइ तर्पयामि नमः ।  
ॐ द्रीं शौषण बाणाय नमः । शौषण बाण श्री पादुकां पूजयांइ तर्पयामि नमः ।  
ॐ क्लीं तापन बाणाय नमः । तापन बाण श्री पादुकां पूजयांइ तर्पयामि नमः ।  
ॐ ब्लूं मोहन बाणाय नमः । मोहन बाण श्री पादुकां पूजयांइ तर्पयामि नमः ।  
ॐ सः उन्मादन बाणाय नमः । उन्मादन बाण श्री पादुकां पूजयांइ तर्पयामि नमः ।

एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां  
पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तृतीयावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

### तुरियावरणम्

ऐं नमः हृदयाय नमः । हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
उच्छिष्ट शिरसे स्वाहा । शिरो शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

चाण्डालि शिखायै वषट् । शिखायै शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 मातङ्गि कवचाय हुं । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 सर्ववशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः तुरीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
 सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां  
 पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
 भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम् ॥  
 अनेन तुरीयावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

### पञ्चमावरणम्

आं क्षां ब्राह्मी कन्यकायै नमः । ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ईं लां माहेश्वरी कन्यकायै नमः । माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ऊं हां कौमारी कन्यकायै नमः । कौमारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ऋं सां वैष्णवी कन्यकायै नमः । वैष्णवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 लूं षां वाराही कन्यकायै नमः । वाराही श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ऐं शां माहेन्द्री कन्यकायै नमः । माहेन्द्री श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ वां चामुण्डा कन्यकायै नमः । चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 अः लां महालक्ष्मी कन्यकायै नमः । महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः पञ्चमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
 सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

अनेन पञ्चमावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

### षष्ठ्यावरणम्

३५ ऐं अणिमा सिद्धि कन्यकायै नमः । अणिमा सिद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३६ ऐं महिमा सिद्धि कन्यकायै नमः । महिमा सिद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३७ ऐं लघिमा सिद्धि कन्यकायै नमः । लघिमा सिद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३८ ऐं गरिमा सिद्धि कन्यकायै नमः । गरिमा सिद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३९ ऐं ईशिता सिद्धि कन्यकायै नमः । ईशिता सिद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४० ऐं वशिता सिद्धि कन्यकायै नमः । वशिता सिद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४१ ऐं प्राकाम्य सिद्धि कन्यकायै नमः । प्राकाम्य सिद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

४२ ऐं प्राप्ति सिद्धि कन्यकायै नमः । प्राप्ति सिद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः षष्ठ्यावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं षष्ठ्यावरणार्चनम् ॥

अनेन षष्ठ्यावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

## सप्तमावरणम्

ॐ कलीं ऊर्वशी कन्यायै नमः । ऊर्वशी अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं मैनका कन्यायै नमः । मैनका अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं रम्भा कन्यायै नमः । रम्भा अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं धृताची कन्यायै नमः । धृताची अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं पुञ्जकस्थला कन्यायै नमः । पुञ्जकस्थला अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं सुकेशी कन्यायै नमः । सुकेशी अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं मञ्जुघोषा कन्यायै नमः । मञ्जुघोषा अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं महारङ्गवती कन्यायै नमः । महारङ्गवती अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं यक्ष कन्यायै नमः । यक्ष अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं गन्धर्व कन्यायै नमः । गन्धर्व अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं सिद्ध कन्यायै नमः । सिद्ध अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं नर कन्यायै नमः । नर अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं नाग कन्यायै नमः । नाग अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं विद्यावर कन्यायै नमः । विद्यावर अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं किम्पुरुष कन्यायै नमः । किम्पुरुष अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ कलीं पिशाच कन्यायै नमः । पिशाच अप्सरः श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः सप्तमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां  
पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै दैहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥

अनेन सप्तमावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।



३० पाशहस्तायै योगिन्यै नमः । पाशहस्ता योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ३० दण्डहस्तायै योगिन्यै नमः । दण्डहस्ता योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ३० प्रचण्डायै योगिन्यै नमः । प्रचण्डा योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० चण्डविक्रमायै योगिन्यै नमः । चण्डविक्रमा योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ शिशुध्नि योगिन्यै नमः । शिशुध्नि योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० पापहन्त्रै योगिन्यै नमः । पापहन्त्री योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० काल्प्ये योगिन्यै नमः । काली योगिनी श्री पादकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ रुधिरपायिन्यै योगिन्यै नमः । रुधिरपायिनी योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० वसाधयाै योगिन्यै नमः । वसाधया योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० गर्भभक्षायै योगिन्यै नमः । गर्भभक्षा योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० शवहस्तायै योगिन्यै नमः । शवहस्ता योगिनी श्री पाटुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अन्नमालिन्ये योगिन्ये नमः । अन्नमालिनी योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० स्थूलकेशिन्यै योगिन्यै नमः । स्थूलकेशिनी योगिनी श्री पादकां पूजयामि तर्पयामि

३० ब्रह्मकृष्णै योगिन्यै नमः । ब्रह्मकृष्णी योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० सर्पस्यायै योगिन्यै नमः । सर्पस्या योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० प्रेतवाहनायै योगिन्यै नमः । प्रेतवाहना योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० दंशशुक्करायै योगिन्यै नमः । दंशशुक्करा योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि

३० क्रौञ्च्ये योगिन्यै नमः । क्रौञ्ची योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० मृगशीर्षयै योगिन्यै नमः । मृगशीर्षा योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

ॐ वषाननायै योगिन्यै नमः । वषानना योगिनी श्री पादकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३० व्यात्तास्यायै योगिन्यै नमः । व्यात्तास्या योगिनी श्री पादकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ धमनिश्वासायै योगिन्यै नमः । धमनिश्वासा योगिनी श्री पादकां प्रजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ व्योमैक चारणायै योगिन्यै नमः । व्योमैक चारणा योगिनी श्री पादकां पूजयामि तर्पयामि नमः

1

३२ ऋक्षर्वदग्ने योगिन्द्रै चमः । ऋक्षर्वदशी योगिनी श्री पाटकां प्रज्यामि तार्यामि चमः ।

३२ वापिर्वै योपिर्वै चमः । वापिर्वै योपिर्वै श्री पादकं प्रसर्यामि वार्यामि चमः ।

३५ शोषिणी योगिनी तमः । शोषिणी योगिनी श्री पाटकां प्रज्ञायामि तर्त्त्वायामि तमः ।

३२ शायद या पाता प नामः । शायद या पाता ना त्रा पकुदा नूर्गयामि तत्परामि  
३३ दहौ योमिद्दौ चमः । दहि योमिनी क्षी पाटकां पञ्ज्यामि वर्त्यामि चमः ।

३२ कोदौर्यै योगिन्त्वं चमः । कोदूर्य योगिन्त्वं श्री मारुकं पञ्चयामि तर्पयामि चमः ।

ॐ स्थूल नासिकायै योगिन्यै नमः । स्थूल नासिका योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ विद्युत्प्रभायै योगिन्यै नमः । विद्युत्प्रभा योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ बलाकास्यायै योगिन्यै नमः । बलाका योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ मार्जर्यै योगिन्यै नमः । मार्जरी योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कटपूतनायै योगिन्यै नमः । कटपूतना योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ अट्टाटहासायै योगिन्यै नमः । अट्टाटहासा योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ कामाक्ष्यै योगिन्यै नमः । कामाक्षा योगिनी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः अष्टमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । - श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं अष्टमावरणार्चनम् ॥

अनेन अष्टमावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

### नवमावरणम्

ॐ वं वटुकाय नमः । वटुक श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ गं गणपतये नमः । गणपति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ क्षं क्षेत्रपालाय नमः । क्षेत्रपाल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ दुं दुर्गायै नमः । दुर्गा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः नवमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । – श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं नवमावरणार्चनम् ॥

अनेन नवमावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

### दशमावरणम्

ॐ इन्द्राय नमः । इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ अग्नयै नमः । अग्नि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ यमाय नमः । यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ निक्रियत्ये नमः । निक्रियति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ वरुणाय नमः । वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ वायवे नमः । वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ सोमाय नमः । सोम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ ईशानाय नमः । ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ अनन्ताय नमः । अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः दशमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । – श्री लघुश्यामाम्बा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं दशमावरणार्चनम् ॥

अनेन दशमावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

### एकादशावरणम्

ॐ वज्राय नमः । वज्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ शक्तये नमः । शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ दण्डय नमः । दण्ड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ खड्गाय नमः । खड्ग श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ पाशाय नमः । पाश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ अङ्कुशाय नमः । अङ्कुश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ गदायै नमः । गदा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ त्रिशूलाय नमः । त्रिशूल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ पद्माय नमः । पद्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ चक्राय नमः । चक्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः एकादशावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । - श्री लघुश्यामाम्बा श्री  
पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं एकादशावरणार्चनम् ॥

अनेन एकादशावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

## द्वादशावरणम्

ॐ वीणायै नमः । वीणा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ वितताय नमः । वितता श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ धनाय नमः । धन श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ सुषिराय नमः । सुषिर श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः द्वादशावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं नमः उच्छिष्ट चाण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा । – श्री लघुश्यामाम्बा श्री  
पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तु भ्यं द्वादशावरणार्चनम् ॥

अनेन द्वादशावरणार्चनेन श्री लघुश्यामाम्बा प्रीयथाम् ।

## पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्धं कल्पायामि ।  
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।  
यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।  
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।  
वं अमृतात्मिकायै अमृतं कल्पायामि ।  
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्त राजोपचारान् कल्पायामि ।

## लघुश्यामा अष्टोत्तरम्

|                                      |                                  |                                      |
|--------------------------------------|----------------------------------|--------------------------------------|
| ॐ महा मत्त मातइगिनीसिद्धि रूपायै नमः | ॐ भवान्यै नमः                    | ॐ सुरोषायै नमः                       |
| ॐ योगिन्यै नमः                       | ॐ भवारधितायै नमः                 | ॐ सुरेखायै नमः                       |
| ॐ भद्रकालयै नमः                      | ॐ भूतिसत्यात्मिकायै नमः          | ॐ महाशेषय ज्ञोपवीतप्रियायै नमः       |
| ॐ रमायै नमः                          | ॐ प्रभोद्धसितायै नमः             | ॐ जयन्त्यै नमः                       |
| ॐ भवान्यै नमः                        | ॐ भानुभास्वत्करायै नमः           | ॐ जयायै नमः                          |
| ॐ भवप्रीतिदायै नमः                   | ॐ धराधीशमात्रे नमः               | ॐ जाग्रती योग्यरूपायै नमः            |
| ॐ भूतियुक्तायै नमः                   | ॐ धरागारवृष्टयै नमः              | ॐ जयाङ्गायै नमः                      |
| ॐ भवाराधितायै नमः                    | ॐ धरेशार्चितायै नमः              | ॐ जपध्यानसन्तुष्टसंज्ञायै नमः        |
| ॐ भूतिसंपत्कर्त्यै नमः               | ॐ धीरवाधीवराङ्गयै नमः            | ॐ जयप्राणरूपायै नमः                  |
| ॐ धनाधीशमात्रे नमः                   | ॐ प्रकृष्टप्रभारूपिण्यै नमः      | ॐ जयज्वालिनीयामिन्यै नमः             |
| ॐ धनगारवृष्टयै नमः                   | ॐ प्राणरूप प्रकृष्टस्वरूपायै नमः | ॐ याम्यरूपायै नमः                    |
| ॐ धनेशार्चितायै नमः                  | ॐ स्वरूपप्रियायै नमः             | ॐ जगन्मातृरूपायै नमः                 |
| ॐ धीरवाधीवराङ्गयै नमः                | ॐ चलत्कुण्डलाकामिन्यै नमः        | ॐ जगद्रक्षणायै नमः                   |
| ॐ प्रकृष्ट प्रभारूपिण्यै नमः         | ॐ कान्तयुक्तायै नमः              | ॐ स्वधावौषडन्तायै नमः                |
| ॐ कामरूप प्रहृष्टायै नमः             | ॐ कपालाचलायै नमः                 | ॐ विलंबाविलंबायै नमः                 |
| ॐ महाकीर्तिदायै नमः                  | ॐ कालोद्धारिण्यै नमः             | ॐ षड्ङगायै नमः                       |
| ॐ कर्णनाल्यै नमः                     | ॐ कदम्बप्रियायै नमः              | ॐ महालम्बरूपासिहस्तायै नमः           |
| ॐ करालीभगादोररूपायै नमः              | ॐ कोटीरी कोटदेहायै नमः           | ॐ पदाहारिणीहारिण्यै नमः              |
| ॐ भगाङ्गयै नमः                       | ॐ क्रमायै नमः                    | ॐ हारिण्यै नमः                       |
| ॐ भगाहवायै नमः                       | ॐ कीर्तिदायै नमः                 | ॐ महामङ्गलायै नमः                    |
| ॐ भगप्रीतिदायै नमः                   | ॐ कर्णरूपायै नमः                 | ॐ मङ्गलप्रेमकीर्तये नमः              |
| ॐ भीमरूपायै नमः                      | ॐ काक्षयै नमः                    | ॐ निशुभच्छिदायै नमः                  |
| ॐ भवान्यै नमः                        | ॐ क्षमाङ्गयै नमः                 | ॐ शुभदर्पत्वहायै नमः                 |
| ॐ महाकैशिकयै नमः                     | ॐ क्षयप्रेमरूपायै नमः            | ॐ आनन्दबीजादिमुक्तस्वरूपायै नमः      |
| ॐ कोशपूर्णायै नमः                    | ॐ क्षपायै नमः                    | ॐ चण्डमुण्डापदा मुख्यचण्डायै नमः     |
| ॐ किशोरी किशोरप्रियनन्देहायै नमः     | ॐ क्षयाक्षायै नमः                | ॐ प्रचण्डाप्रचण्डायै नमः             |
| ॐ महाकारणाकारणायै नमः                | ॐ क्षयाहवायै नमः                 | ॐ महाचण्डवेगायै नमः                  |
| ॐ कर्मशीलायै नमः                     | ॐ क्षयप्रान्तरायै नमः            | ॐ चलच्चमरायै नमः                     |
| ॐ कपालि प्रसिद्धायै नमः              | ॐ क्षवत्कामिन्यै नमः             | ॐ चामरा चन्द्रकीर्तये नमः            |
| ॐ महासिद्धि खण्डायै नमः              | ॐ क्षारिणी क्षीरपूर्णायै नमः     | ॐ सुचामीकराचित्रभूषोज्ज्वलाङ्गयै नमः |
| ॐ मकारप्रियायै नमः                   | ॐ शिवाङ्गयै नमः                  | ॐ सुसङ्गीतीतायै नमः                  |
| ॐ मानरूपायै नमः                      | ॐ शाकंभरी शाकदेहायै नमः          |                                      |
| ॐ महेश्यै नमः                        | ॐ महाशाकयज्ञायै नमः              |                                      |
| ॐ महोल्लसिनी लास्यलीला लयाङ्गयै नमः  | ॐ फलप्राशकायै नमः                |                                      |
| ॐ क्षमा क्षेमशीलायै नमः              | ॐ शकाहवायै नमः                   |                                      |
| ॐ क्षपाकारिण्यै नमः                  | ॐ शकाहवाशकाखयायै नमः             |                                      |
| ॐ अक्षयप्रीतिदायै नमः                | ॐ शकायै नमः                      |                                      |
| ॐ भूतियुक्तायै नमः                   | ॐ शकाक्षान्तरोषायै नमः           |                                      |



श्री वारवादिन्यम्बा श्री पाटुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

## वाग्वादिनि मन्त्र जप क्रमः

अस्य श्री वाग्वादिनी महामन्त्रस्य  
कण्व ऋषिः । विराट् छन्दः ।  
श्री वागीश्वरी देवता ।

ऐं बीजं  
सौः शक्तिः  
कलीं कीलकं  
मम श्री वाग्वादिन्यम्बा प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

| करन्यासं                       | अङ्गन्यासं                       |
|--------------------------------|----------------------------------|
| ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।        | ऐं हृदयाय नमः ।                  |
| कलीं तर्जनीभ्यां नमः ।         | कलीं शिरसे स्वाहा ।              |
| सौः मध्यमाभ्यां नमः ।          | सौः शिखायै वषट् ।                |
| वदवद अनामिकाभ्यां नमः ।        | वदवद कवचाय हुं ।                 |
| वाग्वादिनि कनिष्ठाभ्यां नमः ।  | वाग्वादिनि नेत्रन्त्रयाय वौषट् । |
| स्वाहा करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । | स्वाहा अस्त्राय फट् ।            |

ॐ भूर्भुवस्वरोऽइति दिग्बन्धः

ध्यानम्

अमलकमलसंस्था लेखिनीपुस्तकोद्यत्-  
करयुगळसरोजा कुन्दमन्दारगौरा ।  
घृतशशाधरखण्डोल्लासिकोटीरपीठा  
भवतु भवभयानां भङ्गिनी भारती नः ॥

## पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्धं कल्पायामि ।  
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।  
यं वाय्वात्मिकायै धूं पं कल्पायामि ।  
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।  
वं अमृतात्मिकायै अमृतं कल्पायामि ।  
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्त राजोपचारान् कल्पायामि ।

## मूल मन्त्रः

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा ।

## अङ्गन्यासं

ऐं हृदयाय नमः ।  
क्लीं शिरसे स्वाहा ।  
सौः शिखायै वषट् ।  
वदवद कवचाय हुं ।  
वाग्वादिनि नैत्रन्त्रयाय वौषट् ।  
स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ॐ भूर्भुवसुवरोऽइति दिग्विमोगः ।

## ध्यानम्

अमलकमलसंस्था लेखिनीपुस्तकोद्यत्-  
करयुगळसरोजा कुन्दमन्दारगौरा ।  
घृतशशधरखण्डोल्लासिकोटीरपीठा  
भवतु भवभयानां भङ्गिनी भारती नः ॥

## पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्धं कल्पायामि ।  
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।  
यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।  
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।  
वं अमृतात्मिकायै अमृतं कल्पायामि ।  
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्त राजोपचारान् कल्पायामि ।

## श्री वाग्वादिनि आवरण पूजा क्रमः

### पीठ पूजा

मण्डूकादि परतत्वाय नमः ।

ऐं क्लीं सौः विभूत्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः उन्नत्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः कान्त्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः सृष्ट्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः कीर्त्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः सन्नत्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः व्युष्ट्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः उत्कृष्ट्यै नमः ।  
 ऐं क्लीं सौः ऋद्ध्यै नमः ।

### श्री वाग्वादिनि आवाहनम् –

अमलकमलसंस्था लैखिनीपुस्तकोद्यत्–  
 करयुगळसरोजा कुन्दमन्दारगौरा ।  
 घृतशशाधरखण्डोल्लासिकोटीरपीठा  
 भवतु भवभयानां भङ्गिनी भारती नः ॥

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा । – श्री वागीश्वर्यम्बायै नमः । –  
 आवाहितो भव । – आवहन मुद्रां प्रदर्शय

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा । – श्री वागीश्वर्यम्बायै नमः । –  
 स्थापितो भव । – स्थापण मुद्रां प्रदर्शय

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा । - श्री वागीश्वर्यम्बायै नमः । -  
संस्थितो भव । - संस्थितो मुद्रां प्रदर्शय

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा । - श्री वागीश्वर्यम्बायै नमः । -  
सन्निरुधो भव । - सन्निरुध मुद्रां प्रदर्शय

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा । - श्री वागीश्वर्यम्बायै नमः । -  
सम्मुखी भव । - सम्मुखी मुद्रां प्रदर्शय

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा । - श्री वागीश्वर्यम्बायै नमः । -  
अवकुण्ठितो भव । - अवकुण्डनमुद्रां प्रदर्शय

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा । - श्री वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि  
नमः ॥ - वन्दन देनु योनि मुद्रांश्च प्रदर्शय

यथा शक्ति षोडश उपचार पूजा पञ्चोपचार पूजा वा कुरुत । वन्दन धेनु योनि मुद्रांश्च  
प्रदर्श्य ।

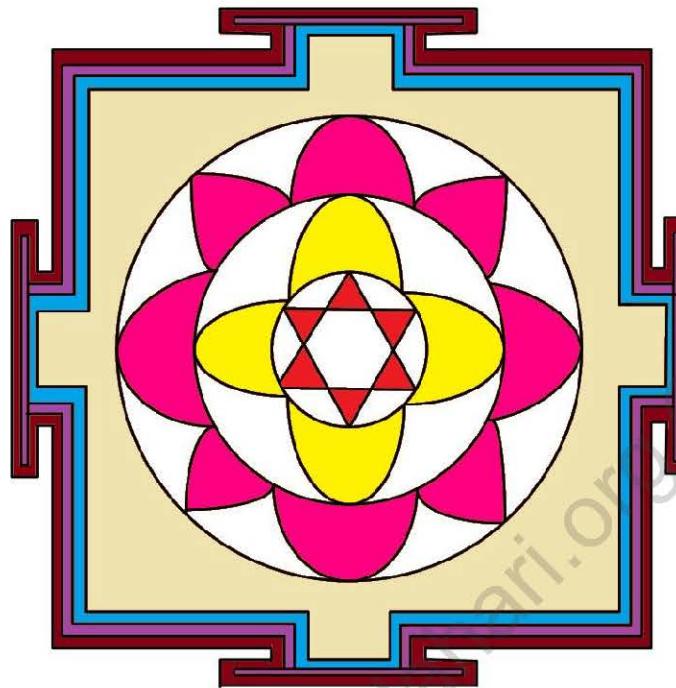
(Do Shodasa upacara puja or panchopacara depending on the time and convenience)

### षडङ्ग तर्पणम् –

ऐं हृदयाय नमः । हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
क्लीं शिरसे स्वाहा । शिरो शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
सौः शिखायै वषट् । शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
वदवद कवचाय हुं । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
वाग्वादिनि नेत्रन्त्रयाय वौषट् । नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

### लयाङ्ग तर्पणम् –

ऐं कलीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा । - श्री वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि  
नमः । (१० वारम्)



### प्रथमावरणम्

ऐं हृदयाय नमः । हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
कलीं शिरसे स्वाहा । शिरो शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
सौः शिखायै वषट् । शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
वदवद कवचाय हुं । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
वाग्वादिनि नेत्रन्नयाय वौषट् । नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
स्वाहा अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः प्रथमावरण देवताः साङ्घाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं कलीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा । - श्री वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि  
नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

अनेन प्रथमावरणार्चनेन श्री वागीश्वर्यम्बा प्रीयथाम् ।

### द्वितीयावरणम्

ऐं क्लीं सौः योगायै नमः । योगा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः सत्यायै नमः । सत्या श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः विमलायै नमः । विमला श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः ज्ञानायै नमः । ज्ञाना श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः बुध्यै नमः । बुद्धि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः स्मृत्यै नमः । स्मृति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः मेधायै नमः । मेधा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः प्रज्ञायै नमः । प्रज्ञा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः द्वितीयावरण देवताः साङ्घाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं क्लीं सौः वद वद वागवादिनि स्वाहा । – श्री वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि  
नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

अनेन द्वितीयावरणार्चनेन श्री वागीश्वर्यम्बा प्रीयथाम् ।

## तृतीयावरणम्

ऐं कलीं सौः आं ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं कलीं सौः ई माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं कलीं सौः ऊं कौमार्यै नमः । कौमारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं कलीं सौः ऋं वैष्णव्यै नमः । वैष्णवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं कलीं सौः लूं वाराह्यै नमः । वाराही श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं कलीं सौः ऐं माहेन्द्र्यै नमः । माहेन्द्री श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं कलीं सौः औं चामुण्डायै नमः । चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं कलीं सौः अः महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं कलीं सौः वद वद वागवादिनि स्वाहा । – श्री वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि  
नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तृतीयावरणार्चनेन श्री वागीश्वर्यम्बा प्रीयथाम् ।

## तुरियावरणम्

ॐ इन्द्राय नमः । इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ आग्नये नमः । अग्नि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ यमाय नमः । यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ निष्ठ्रितये नमः । निष्ठ्रिति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ वरुणाय नमः । वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ वायवे नमः । वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ सौमाय नमः । सौम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ ईशानाय नमः । ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ अनन्ताय नमः । अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः तुरीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
 सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं कलीं सौः वद वद वागवादिनि स्वाहा । – श्री वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि  
 नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
 भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तुरीयावरणार्चनेन श्री वागीश्वर्यम्बा प्रीयथाम् ।

### पञ्चमावरणम्

ॐ वज्राय नमः । वज्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ शक्तयै नमः । शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ दण्डय नमः । दण्ड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ खड्गाय नमः । खड्ग श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ पाशाय नमः । पाश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ अङ्गुशाय नमः । अङ्गुश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ गदायै नमः । गदा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
 ॐ त्रिशूलाय नमः । त्रिशूल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

ॐ पद्माय नमः । पद्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ चक्राय नमः । चक्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः पञ्चमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ऐं कर्लीं सौः वद वद वागवादिनि स्वाहा । – श्री वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि  
नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

अनेन पञ्चमावरणार्चनेन श्री वागीश्वर्यम्बा प्रीयथाम् ।

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्धं कल्पायामि ।  
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।  
यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।  
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।  
वं अमृतात्मिकायै अमृतं कल्पायामि ।  
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्तं राजोपचारान् कल्पायामि ।

## वागीश्वरी अष्टोत्रम्

|                               |                           |                         |
|-------------------------------|---------------------------|-------------------------|
| ॐ वागीश्वर्यै नमः             | ॐ आशाधारायै नमः           | ॐ दौहित्रदायै नमः       |
| ॐ सर्वमन्त्रमयायै नमः         | ॐ पचवित्तवातायै नमः       | ॐ नादिन्यै नमः          |
| ॐ विद्यायै नमः                | ॐ पङ्कितस्वरूपिण्यै नमः   | ॐ पुञ्चै नमः            |
| ॐ सर्वमन्त्राक्षरमयायै नमः    | ॐ पञ्चस्थानविभाविन्यै नमः | ॐ श्वसायै विप्रयायै नमः |
| ॐ वरायै नमः                   | ॐ उदक्यायै नमः            | ॐ स्तनदायै नमः          |
| ॐ मधुस्रवायै नमः              | ॐ व्रिषभाइकायै नमः        | ॐ स्तनधरायै नमः         |
| ॐ श्रवणायै नमः                | ॐ त्रिमूर्त्यै नमः        | ॐ विश्वयोन्यै नमः       |
| ॐ भास्मर्यै नमः               | ॐ धूम्रकृत्यै नमः         | ॐ स्तनप्रदायै नमः       |
| ॐ भ्रमरालयायै नमः             | ॐ प्रस्रवणायै नमः         | ॐ शिशुरूपायै नमः        |
| ॐ मातृमण्डलमध्यस्थायै नमः     | ॐ बहिःस्थितायै नमः        | ॐ सङ्गरूपायै नमः        |
| ॐ मातृमण्डलवासिन्यै नमः       | ॐ रजसे नमः                | ॐ लोकपालिन्यै नमः       |
| ॐ कुमारजनन्यै नमः             | ॐ शुक्लायै नमः            | ॐ नन्दिन्यै नमः         |
| ॐ कूरायै नमः                  | ॐ धराशक्यै नमः            | ॐ खटवाङ्गधारिण्यै नमः   |
| ॐ सुमुख्यै नमः                | ॐ जरायुष्यै नमः           | ॐ सखडगायै नमः           |
| ॐ ज्वरनाशिन्यै नमः            | ॐ गर्भधारिण्यै नमः        | ॐ सबाणायै नमः           |
| ॐ अतितायै नमः                 | ॐ त्रिकालज्ञायै नमः       | ॐ भानुवर्तिन्यै नमः     |
| ॐ विद्यमानायै नमः             | ॐ त्रिलिङ्गायै नमः        | ॐ विरुद्धाक्ष्यै नमः    |
| ॐ भाविन्यै नमः                | ॐ त्रिमूर्त्यै नमः        | ॐ महिषासृक्षिप्यायै नमः |
| ॐ प्रीतिमन्दिरायै नमः         | ॐ पुरवसिन्यै नमः          | ॐ कौशिक्यै नमः          |
| ॐ सर्वसौख्यदात्र्यै नमः       | ॐ अरागायै नमः             | ॐ उमायै नमः             |
| ॐ अतिशक्तायै नमः              | ॐ परकामतत्वायै नमः        | ॐ शाकम्बर्यै नमः        |
| ॐ आहारपरिणामिन्यै नमः         | ॐ रागिण्यै नमः            | ॐ श्वेतायै नमः          |
| ॐ निदानायै नमः                | ॐ प्राच्यावाच्यायै नमः    | ॐ कृष्णायै नमः          |
| ॐ पञ्चभूतस्वरूपायै नमः        | ॐ प्रतीच्यायै नमः         | ॐ कैटभनाशिन्यै नमः      |
| ॐ भवसागरतारिण्यै नमः          | ॐ उदीच्यायै नमः           | ॐ हिरण्याक्ष्यै नमः     |
| ॐ अर्भकायै नमः                | ॐ उदग्निदशायै नमः         | ॐ शुभलक्षणायै नमः       |
| ॐ कालभवायै नमः                | ॐ अहङ्कारात्मिकायै नमः    |                         |
| ॐ कालवर्तिन्यै नमः            | ॐ अहङ्कारायै नमः          |                         |
| ॐ कलङ्करहितायै नमः            | ॐ बालवामायै नमः           |                         |
| ॐ हरिस्वरूपायै नमः            | ॐ प्रियायै नमः            |                         |
| ॐ चतुःषष्ठ्यभ्युदयदयिन्यै नमः | ॐ सुक्ष्मस्रवायै नमः      |                         |
| ॐ जीर्णायै नमः                | ॐ समिध्यै नमः             |                         |
| ॐ कृतकेतनायै नमः              | ॐ सुश्रद्धायै नमः         |                         |
| ॐ हरिवल्लभायै नमः             | ॐ श्राधदेवतायै नमः        |                         |
| ॐ अक्षरस्वरूपायै नमः          | ॐ मत्रे नमः               |                         |
| ॐ रतिपीत्यै नमः               | ॐ मातामहै नमः             |                         |
| ॐ रतिरागविवर्धिन्यै नमः       | ॐ तृष्णितरूपायै नमः       |                         |
| ॐ पञ्चपातकहरायै नमः           | ॐ पितृमात्रे नमः          |                         |
| ॐ भिन्नायै नमः                | ॐ पितामहै नमः             |                         |
| ॐ पञ्चश्रेष्ठायै नमः          | ॐ स्नुषादायै नमः          |                         |



श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः ।

## नकुली वागीश्वर्यम्बा मन्त्र जप क्रमः

अस्य श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा मन्त्रस्य  
 कहोऽ ऋषिः ।  
 गायत्री छन्दः ।  
 श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा देवता ।

ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकम्

मम श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा प्रसाद सिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।

| करन्यासं  | अङ्गन्यासं  |
|---|---|
| ॐ ओष्ठपिधाना अङ्गुष्ठाभ्यां नमः ।<br>नकुली दन्तैः तर्जनीभ्यां नमः ।<br>परिवृतापविः मध्यमाभ्यां नमः ।<br>सर्वस्यै वाच ईशाना अनामिकाभ्यां नमः ।<br>चारु मामिह वादयेत् कनिष्ठाभ्यां नमः ।<br>ॐ ओष्ठपिधाना नकुली दन्तैः परिवृतापविः<br>सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्<br>करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः । | ॐ ओष्ठपिधाना हृदयाय नमः ।<br>नकुली दन्तैः शिरसे स्वाहा ।<br>परिवृतापविः शिखायै वषट् ।<br>सर्वस्यै वाच ईशाना कवचाय हुं ।<br>चारु मामिह वादयेत् नेत्रन्त्रयाय वौषट् ।<br>ॐ ओष्ठपिधाना नकुली दन्तैः परिवृतापविः<br>सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्<br>अस्त्राय फट् । |

ॐ भूर्भुवस्वरोऽइति दिग्बन्धः

ध्यानम्

नव नळिन निरुडा वल्लभापदमजस्य द्युति विकसित चन्द्रोदामकान्ति प्रसन्ना ।  
 विहरतु मम चित्ते सर्वबोध प्रधात्री वितरतु सुकवित्वं सर्वलोकप्रसिद्धं ॥  
 नकुली वज्रदन्तालि साध्य जिह्वाऽहिदंशिनि । भक्तवक्तृत्यजननी भावनीया सरस्वती ॥  
 विकासभाजि हृत्पद्मेरिथां उल्लासदायिनी । परवाक् स्तम्भिनी नित्यां स्मरामि नकुलीं सदा ॥  
 ओष्ठाभ्यां पिशितैः च पद्मितैः दन्तैः घनैः संवृता  
     तीक्ष्णा वज्रवदत्र सर्वजगतां या स्वामिनी सन्ततं ।  
 सा मां चारु करोतु वादनिपुणं सर्वत्र  
     सा वाग्रसा येन स्याहमेव सर्वजगतामत्यर्थमग्रेसरः ॥  
 ताक्ष्यारुदा महित ललितं तालु जन्मा विशद्गुकी  
 चञ्चद्वीणा कलरव शुकी चक्रशङ्खसि पाणि ।  
 राजोन्तुंसा मनसि नकुती राजतु इयामलाया  
 प्रत्यङ्गत्वं परिगतवती प्रत्यहं मामकीने ॥  
 प्रत्याभीष्ट शरत् शशाङ्करुचिभिः दण्डामयूखाङ्कुरैः  
     अज्ञानाख्य महान्यकारपटलीनिवासियन्ती मुहुः ।  
 शुद्धज्ञान सुधारसद्वमयीमूर्ति दधानां शिवां  
     वागीशा नकुली करोतु मनस शद्दि प्रकृष्टा मम ॥

## पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्थं कल्पायामि ।  
 हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।  
 यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।  
 रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।  
 वं अमृतात्मिकायै अमृतं कल्पायामि ।  
 सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्त राजोपचारान् कल्पायामि ।

## मूल मन्त्रः

ॐ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृतापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह  
 वादयेत् ।

## अङ्गन्यासं

३० ओष्ठापिधाना हृदयाय नमः ।  
नकुली दन्तैः शिरसे स्वाहा ।  
परिवृतापविः शिखायै वृषट् ।  
सर्वस्यै कवचाय हुं ।  
वाच ईशाना नेत्रन्याय वौषट् ।  
चारु मामिह वादयेत् अस्त्राय फट् ।

३१ भूर्भुवसुवरों इति दिग्विमोगः ।

## ध्यानम्

नव नळिन निरुडा वल्लभापदमजस्य द्युति विकसित चन्द्रोदामकान्ति प्रसन्ना ।  
विहरतु मम चित्ते सर्वबोध प्रधात्री वितरतु सुकवित्वं सर्वलोकप्रसिद्धं ॥  
नकुली वज्रदन्तालि साध्य जिह्वाऽहिदंशिनि । भक्तवक्तृत्यजननी भावनीया सरस्वती ॥  
विकासभाजि हृत्यदमेस्थितां उल्लासदायिर्णि । परवाक् स्तम्भिर्णि नित्यां स्मरामि नकुलीं सदा ॥  
ओष्ठाभ्यां पिशितैः च पद्मिक्त निशितैः दन्तैः घनैः संवृता  
तीक्ष्णा वज्रवदत्र सर्वजगतां या स्वामिनी सन्ततं ।  
सा मां चारु करोत् वादनिषुणं सर्वत्र  
सा वाग्रसा येन स्याहमेव सर्वजगतामत्यर्थमग्रेसरः ॥  
ताक्ष्यारुडा महित ललितं तालु जन्मा विशद्गुकी  
चञ्चद्वीणा कलरव शुकी चक्रशङ्खासि पाणि: ।  
राजोन्तुंसा मनसि नकुती राजतु श्यामलाया  
प्रत्यङ्गत्वं परिगतवती प्रत्यहं मामकीने ॥  
प्रत्याभीष्ट शरत् शशाङ्करुचिभिः दंष्ट्रामयुखाङ्कुरैः  
अज्ञानाख्य महान्धकारपटलीनिर्वासियन्ती मुहुः ।  
शुद्धज्ञान सुधारसद्रवमयीमूर्ति दधानां शिवां  
वारीशा नकुली करोत् मनस शुद्धिं प्रकृष्टा मम ॥

## पञ्चपूजा

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्धं कल्पायामि ।  
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।  
यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।  
रं अग्न्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।  
वं अमृतात्मिकायै अमृतं कल्पायामि ।  
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्त राजोपचारान् कल्पायामि ।

© Purnanandalahari.org ©

## श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा आवरण पूजा क्रमः

### पीठ पूजा

मण्डूकादि परतत्वाय नमः ।

ऐं क्लीं सौः विभूत्यै नमः ।

ऐं क्लीं सौः उन्नत्यै नमः ।

ऐं क्लीं सौः कान्त्यै नमः ।

ऐं क्लीं सौः सृष्ट्यै नमः ।

ऐं क्लीं सौः कीर्त्यै नमः ।

ऐं क्लीं सौः सन्नत्यै नमः ।

ऐं क्लीं सौः व्युष्ट्यै नमः ।

ऐं क्लीं सौः उत्कृष्ट्यै नमः ।

ऐं क्लीं सौः ऋद्ध्यै नमः ।

ऋग्न्यासः

ससर्परी रमति वाधमाना ब्रह्मिमाय जमदग्नि दत्ता -पादादि जानुपर्यन्तं  
आसूर्यस्य दुहिता ततान श्रवो देवेष्वमृतमजुर्य - जान्नादि नाभिपर्यन्तं  
ससर्परीभूत्यमेभ्यः अधिश्रवःपाञ्चजन्यार्यु कृषिषु - नाभ्यादि हृदय पर्यन्तं  
सा पक्ष्यानव्यमायुर्दधानायामे पलस्ति जमदग्नयो दधुः - हृदयादि कण्ठ पर्यन्तं  
चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ये ब्राह्मणाये मनीषिणः।  
गुहा त्रीणि निहिता नङ्गयति तुरीय वाचा मउषो वदन्ति ॥- मुख मध्ये

ससर्परी रमति वाधमाना ब्रह्मिमाय जमदग्नि दत्ता ।

आसूर्यस्य दुहिता ततान श्रवो देवेष्वमृतमजुर्य ॥

- दक्षिणभागे नासिकाधःमध्यप्रदेशं आरभ्य ऊर्ध्वोष्ठ इमश्रु पर्यन्तं

ससर्परीभूत्यमेभ्यः अधिश्रवःपाञ्चजन्यार्यु कृषिषु ।

सा पक्ष्यानव्यमायुर्दधानायामे पलस्ति जमदग्नयो दधुः ॥ अधरोष्ठाधः मध्यदेशं आरभ्य दक्षिण भागान्तं

यद्वाक् वदन्त्यविवेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा ।

चतस्र ऊर्ज दुदुहे पर्यांसि क्वस्विदस्याः परमं जगाम - वामभागे नासाधःमध्यप्रदेशं आरभ्य वाम इमश्रु पर्यन्तं

देवीं वाचमजनयन्त देवाः तां विश्वरूपा पश्वो वदन्ति ।

सा नो मन्त्रेष्मूर्ज दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टतैतु ॥-अधरोष्ठाधः मध्यदेशं आरभ्य वाम भागान्तं

ससर्परी रमति वाधमाना ब्रह्मिमाय जमदग्नि दत्ता ।

आसूर्यस्य दुहिता ततान श्रवो देवेष्वमृतमजुर्य ॥ नासामूले

ससर्परीभूत्यमेभ्यः अधिश्रवःपाञ्चजन्यार्यु कृषिषु ।

सा पक्ष्यानव्यमायुर्दधानायामे पलस्ति जमदग्नयो दधुः ॥ चित्वुक

यद्वाक् वदन्त्यविवेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा ।

चतस्र ऊर्ज दुदुहेपर्यांसि क्वस्विदस्याः परमं जगाम - नेत्रत्रये

देवीं वाचमजनयन्त देवाः तां विश्वरूपा पश्वो वदन्ति ।

सा नो मन्त्रेष्मूर्ज दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टतैतु ॥-गण्डयोः

ससर्परी रमति वाधमाना ब्रह्मिमाय जमदग्नि दत्ता ।

आसूर्यस्य दुहिता ततान श्रवो देवेष्वमृतमजुर्य ॥ दक्षिण हस्ते

ससर्परीभूत्यमेभ्यः अधिश्रवःपाञ्चजन्यार्यु कृषिषु ।

सा पक्ष्यानव्यमायुर्दधानायामे पलस्ति जमदग्नयो दधुः ॥ वाम हस्ते

यद्वाक् वदन्त्यविवेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा ।

चतस्र ऊर्ज दुदुहे पर्यांसि क्वस्विदस्याः परमं जगाम - वामोरौ

देवीं वाचमजनयन्त देवाः तां विश्वरूपा पश्वो वदन्ति ।

सा नो मन्त्रेष्मूर्ज दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टतैतु ॥ दक्षोरौ

चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्रह्मणा ये मनीषिणः

गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीय वाचो मनुष्यो वदन्ति ॥ - पृष्ठे

ससर्परी रमति वाधमाना ब्रह्मिमाय जमदग्नि दत्ता ।

आसूर्यस्य दुहिता ततान श्रवो देवेष्वमृतमजुर्य ॥-गुह्यं

ससर्परीभूत्यमेभ्यः अधिश्रवःपाञ्चजन्यार्यु कृषिषु ।

सा पक्ष्यानव्यमायुर्दधानायामे पलस्ति जमदग्नयो दधुः ॥ नाभि

यद्वाक् वदन्त्यविवेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्द्रा ।

चतस्र ऊर्ज दुदुहे पर्यांसि क्वस्विदस्याः परमं जगाम ॥ - हृदयं

देवीं वाचमजनयन्त देवाः तां विश्वरूपा पश्वो वदन्ति ।

सा नो मन्त्रेष्मूर्ज दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टतैतु ॥-कण्ठं

अथ मूल मन्त्र न्यासः

4-ओष्ठापिधाना नकुली-पादासि जानु पर्यन्तं  
4-दन्तैः परिवृत्तावपविः-जान्वादि नाभि पर्यन्तं  
4-सर्वस्यै वाच ईशाना- नान्यादि हृदय पर्यन्तं  
4-चारु मामिह वादयेत्- हृदयादि कण्ठान्तं  
4-ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तावपविः- कण्ठादि मुखान्तं  
4-सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्- मुखादि शिरोन्तं

4-ओष्ठापिधाना नकुली- उत्तरोष्ठ दक्षिण भागे  
4-दन्तैः परिवृत्तावपविः- अधरोष्ठ दक्षिण भागे  
4-सर्वस्यै वाच ईशाना- ऊर्ध्वोष्ठ वाम भागे  
4-चारु मामिह वादयेत्- अधरोष्ठ वाम भागे

4-ओष्ठापिधाना नकुली-ऊर्ध्वदन्त पड्क्तौ मध्यदन्तमारभ्य दक्षिणभागे  
4-दन्तैः परिवृत्तावपविः-अधोदन्त पड्क्तौ मध्यदन्तमारभ्य दक्षिण भागे  
4-सर्वस्यै वाच ईशाना- ऊर्ध्वदन्त पड्क्तौ मध्यदन्तमारभ्य वाम भागे  
4-चारु मामिह वादयेत्-अधोदन्त पड्क्तौ मध्यदन्तमारभ्य वाम भागे  
4-ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तावपविः- नासामूले  
4-सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्- चिबुके  
4-ओष्ठापिधाना नकुली- दक्षिण हस्ते  
4-दन्तैः परिवृत्तावपविः- वाम हस्ते  
4-सर्वस्यै वाच ईशाना- दक्षोरौ  
4-चारु मामिह वादयेत्- वमोरौ

4-ओष्ठापिधाना नकुली- मूलाधारे  
4-दन्तैः परिवृत्तावपविः- नाभौ  
4-सर्वस्यै वाच ईशाना- हृदये  
4-चारु मामिह वादयेत्- कण्ठे

4-ओष्ठापिधाना नकुली-ससर्परी रमतिं बाधमाना ब्रह्मिमाय जमदग्नि दत्ता ।  
आसूर्यस्य दुहिता ततान श्रघो देवेष्वमृतमजुर्य ॥ जिह्वामूले  
4-दन्तैः परिवृत्तावपविः-ससर्परीभूत्यमेभ्यः अधिश्वःपाञ्चजन्यार्यु कृषिषु ।  
सा पक्ष्यानव्यमायुर्दधानायामे पलस्ति जमदग्नयो दधुः ॥ जिह्वा मध्ये  
4-सर्वस्यै वाच ईशाना-यद्वाक् वदन्त्यविवेतनानि राष्ट्री देवानां निषसाद मन्त्रा ।  
चतस्र ऊर्ज दुदुहेपयसि क्वस्विदस्याः परमं जगाम- जिह्वा दक्षिण पार्श्वे  
4-चारु मामिह वादयेत्-देवीं वाचमजनयन्त देवाः तां विश्वरूपा पश्वो वदन्ति ।  
सा नो मन्त्रेष्मूर्ज दुहाना धेनुर्वागग्रस्मानुपसुष्टतैर्तु ॥- जिह्वा वाम पार्श्वे  
4-ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तावपविः । सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत् ॥  
चत्वारि वाक् परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्रह्मणा ये मनीषिणःगुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीय वाचो  
मनुष्यो वदन्ति -जिह्वाये

4-ओष्ठापिधाना नकुली-ससर्परी रमति बाधमाना ब्रह्मिमाय जमदग्नि दत्ता ।  
 आसूर्यस्य दुहिता ततान श्रवो देवेष्वमृतमजुर्य ॥ दक्षिण बाहु  
 4-दन्तैः परिवृतावपविः-ससर्परीभूत्यमेभ्यः अधिश्रवःपाञ्चजन्यार्यु कृषिषु ।  
 सा पक्ष्यानव्यमायुर्दधानायामे पलस्ति जमदग्नयो दधुः ॥ वाम बाहु  
 4-सर्वस्यै वाच ईशाना-यद्वाक् वदन्त्यविवेतनानि राष्ट्री देवानां निपसाद मन्त्रा ।  
 चतस ऊर्ज दुदुहे पयांसि क्वस्यिदस्या: परमं जगाम ॥- दक्षिण पार्श्वे  
 4-चारु मामिह वादयेत्-देवीं वाचमजनयन्त देवाः तां विश्वरूपं पश्वो वदन्ति ।  
 सा नो मन्त्रेष्मूर्ज दुहाना धेनुर्वागस्मानुपसुष्टतैतु ॥- वाम पार्श्वे  
 4-ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृतावपविः | सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत् ॥-चत्वारि वाक्  
 परिमिता पदानि तानि विदुर्ब्रह्मणा ये मनीषिणःगुहा त्रीणि निहिता नेङ्गायन्ति तुरीय वाचो मनुष्यो वदन्ति  
 -वक्त्रे  
 4-ओष्ठापिधानां नकुली-दक्षिणपर्श्वे  
 4-दन्तैः परिवृतावपविः-वाम पार्श्वे  
 4-सर्वस्यै वाच ईशाना- दक्षिण बाहु  
 4-चारु मामिह वादयेत्-वाम बाहु  
 4-ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृतावपविः  
 सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्- ओष्ठ मध्ये

## श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा आवाहनम् -

नव नळिन निरुडा वल्लभापद्मजस्य द्युति विकसित चन्द्रोदामकान्ति प्रसन्ना ।  
 विहरतु मम चित्ते सर्वबोध प्रधात्री वितरतु सुकवित्यं सर्वलोकप्रसिद्धं ॥  
 नकुली वज्रदन्तालि साध्य जिह्वाऽहिदंशिनि । भक्तवक्तृत्यजननी भावनीया सरस्वती ॥  
 विकासभाजि हृत्पद्मेस्थितां उल्लासदायिनीं । परवाक् स्तम्भिनीं नित्यां स्मरामि नकुलीं सदा ॥  
 ओष्ठाभ्यां पिशितैःच पद्मिक्त निशितैः दन्तैः घनैः संवृता  
     तीक्ष्णा वज्रवदत्र सर्वजगतां या स्वामिनी सन्ततं ।  
 सा मां चारु करोत् वादनिपुणं सर्वत्र  
     सा वाग्रसा येन स्याहमेव सर्वजगतामत्यर्थमग्नेसरः ॥  
 ताक्षर्यारुडा महित ललितं तालु जन्मा विशङ्की  
 चञ्चद्वीणा कलरव शुक्री चक्रशङ्खासि पाणिः ।  
 राजोन्तुंसा मनसि नकुती राजतु इयामलाया  
 प्रत्यङ्गत्वं परिगतवती प्रत्यहं मामकीने ॥  
 प्रत्याभीष्ट शरत् शशाङ्करुचिभिः दंष्ट्रामयुखाङ्कुरैः  
 अज्ञानात्य महान्यकारपटलीनिर्वासयन्ती मुहुः ।  
 शुद्धज्ञान सुधारसद्रवमयीमूर्ति दधानां शिवां  
     वागीशा नकुली करोत् मनस शृद्धिं प्रकृष्टा मम ॥

ॐ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृतापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह  
 वादयेत् । श्री नकुली वागीश्वर्यम्बायै नमः । - आवाहितो भव । - आवहन मुद्रा  
 प्रदर्शय

ॐ औष्टापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह  
वादयेत् । श्री नकुली वागीश्वर्यम्बायै नमः । – स्थापितो भव । – स्थापण मुद्रां  
प्रदर्शय

ॐ औष्टापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह  
वादयेत् । श्री नकुली वागीश्वर्यम्बायै नमः । – संस्थितो भव । – संस्थितो मुद्रां  
प्रदर्शय

ॐ औष्टापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह  
वादयेत् । श्री नकुली वागीश्वर्यम्बायै नमः । – सन्निरुद्धो भव । – सन्निरुद्ध मुद्रां  
प्रदर्शय

ॐ औष्टापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह  
वादयेत् । श्री नकुली वागीश्वर्यम्बायै नमः । – समुखी भव । – समुखी मुद्रां  
प्रदर्शय

ॐ औष्टापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह  
वादयेत् । श्री नकुली वागीश्वर्यम्बायै नमः । – अवकुण्ठितो भव । – अवकुण्ठनमुद्रां  
प्रदर्शय

ॐ औष्टापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह  
वादयेत् । श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः ॥ – वन्दन देनु योनि  
मुद्रांश्च प्रदर्शय

यथा शक्ति षोडश उपचार पूजा पञ्चोपचार पूजा वा कुरुत । वन्दन धेनु योनि मुद्रांश्च  
प्रदर्श्य ।

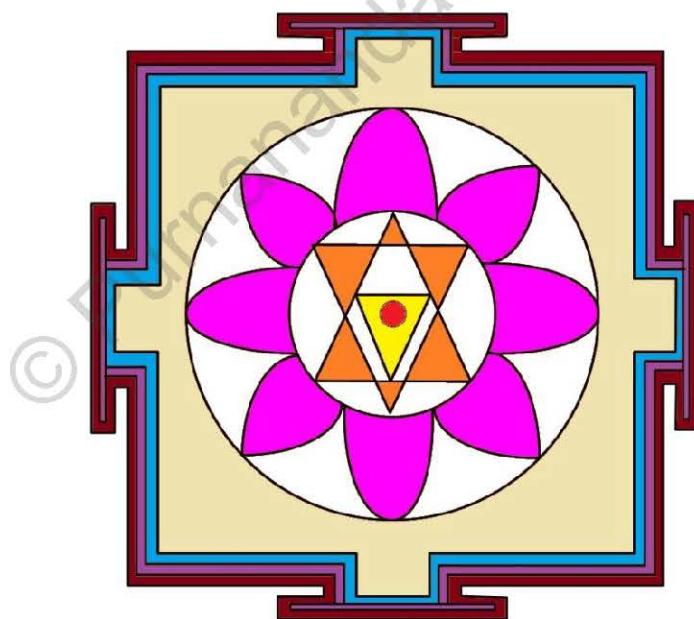
(Do Shodasa upacara puja or panchopacara depending on the time and convenience)

## षडङ्ग तर्पणम् –

ॐ ओष्ठापिधाना हृदयाय नमः । हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
नकुली दन्तैः शिरसे स्वाहा । शिरो शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
परिवृत्तापविः शिखायै वषट् । शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
सर्वस्यै वाच ईशाना कवचाय हुं । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
चारु मामिह वादयेत् नेत्रन्त्रयाय वौषट् । नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्  
अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

## लयाङ्ग तर्पणम् –

ॐ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्  
। – श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः । (१० वारम्)



## प्रथमावरणम्

ॐ ओष्ठापिधाना हृदयाय नमः । हृदय शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
नकुली दन्तैः शिरसे स्वाहा । शिरो शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
परिवृत्तापविः शिखायै वषट् । शिखा शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
सर्वस्यै वाच ईशाना कवचाय हुं । कवच शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
चारु मामिह वादयेत् नेत्रन्त्रयाय वौषट् । नेत्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्  
अस्त्राय फट् । अस्त्र शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः प्रथमावरण देवताः साङ्घाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्  
। - श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

अनेन प्रथमावरणार्चनेन श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा प्रीयथाम् ।

## द्वितीयावरणम्

ऐं क्लीं सौः प्रज्ञायै नमः । प्रज्ञा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः मेधायै नमः । मेधा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः श्रुत्यै नमः । श्रुति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः शक्त्यै नमः । शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः स्मृत्यै नमः । स्मृति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ऐं क्लीं सौः वागीश्वर्यै नमः । वागीश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एं कलीं सौः मत्यै नमः । मति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
एं कलीं सौः स्वस्त्यै नमः । स्वस्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः द्वितीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ औष्टपिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्  
। – श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मै देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

अनेन द्वितीयावरणार्चनेन श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा प्रीयथाम् ।

## तृतीयावरणम्

एं कलीं सौः आं ब्राह्म्यै नमः । ब्राह्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
एं कलीं सौः ई माहेश्वर्यै नमः । माहेश्वरी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
एं कलीं सौः ऊं कौमार्यै नमः । कौमारी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
एं कलीं सौः ऋं वैष्णव्यै नमः । वैष्णवी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
एं कलीं सौः लं वाराह्यै नमः । वाराही श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
एं कलीं सौः ऐं माहेन्द्र्यै नमः । माहेन्द्री श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
एं कलीं सौः औं चामुण्डायै नमः । चामुण्डा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
एं कलीं सौः अः महालक्ष्म्यै नमः । महालक्ष्मी श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः तृतीयावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ ओष्ठपिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्  
। – श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तृतीयावरणार्चनेन श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा प्रीयथाम् ।

### तुरियावरणम्

ॐ इन्द्राय नमः । इन्द्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ अग्नये नमः । अग्नि श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ यमाय नमः । यम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ निकृतये नमः । निकृति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ वरुणाय नमः । वरुण श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ वायवे नमः । वायु श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ सौमाय नमः । सौम श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ ईशानाय नमः । ईशान श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ ब्रह्मणे नमः । ब्रह्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ अनन्ताय नमः । अनन्त श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः तुरियावरण देवताः साङ्घाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ ओष्ठपिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्  
। – श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम् ॥

अनेन तुरीयावरणार्चनेन श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा प्रीयथाम् ।

### पञ्चमावरणम्

ॐ वज्राय नमः । वज्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ शक्तये नमः । शक्ति श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ दण्डय नमः । दण्ड श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ खड्गाय नमः । खड्ग श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ पाशाय नमः । पाश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ अङ्कुशाय नमः । अङ्कुश श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ गदायै नमः । गदा श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ त्रिशूलाय नमः । त्रिशूल श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ पद्माय नमः । पद्म श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।  
ॐ चक्राय नमः । चक्र श्री पादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

एताः पञ्चमावरण देवताः साङ्गाः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः  
सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः ।

ॐ औष्टापिधाना नकुली दन्तैः परिवृत्तापविः सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्  
। - श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा श्री पादुकां पूजयामि नमः । (३ वारम्)

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागत वत्सले ।  
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ॥

अनेन पञ्चमावरणार्चनेन श्री नकुली वागीश्वर्यम्बा प्रीयथाम् ।

लं पृथिव्यात्मिकायै गन्थं कल्पायामि ।  
हं आकाशात्मिकायै पुष्पाणि कल्पायामि ।  
यं वाय्वात्मिकायै धूपं कल्पायामि ।  
रं अरन्यात्मिकायै दीपं कल्पायामि ।  
वं अमृतात्मिकायै अमृतं कल्पायामि ।  
सं सर्वात्मिकायै ताम्बूलादि समस्तं राजोपचारान् कल्पायामि ।

© Purnanandalahari.org ©

## vimalA, kirltkOnA

vimalA is the name of the goddess at the kirltkOnA shakti plth located at kirltEshwari, West Bengal. Sati's crown fell at this place. This place is about 240 kms from Kolkatta and takes about 5.5 hrs to reach. This is the oldest temple in the district of Murshidabad and was destroyed once in 1405. The current temple was reconstructed in the 19<sup>th</sup> century. The bhairava is samwarta bhairavA. The dEvi inside this temple has a distinct structure. There is no idol or a picture or a pindi. A red color stone with symbolic representation of the Goddess is present here. The crown shaped stone is visible under that with skull lines clearly visible. The current priest, Dilip Bhattacharya is very knowledgeable on the history, religious procedures followed, and the practices that were performed in olden days in this temple.



View of the temple



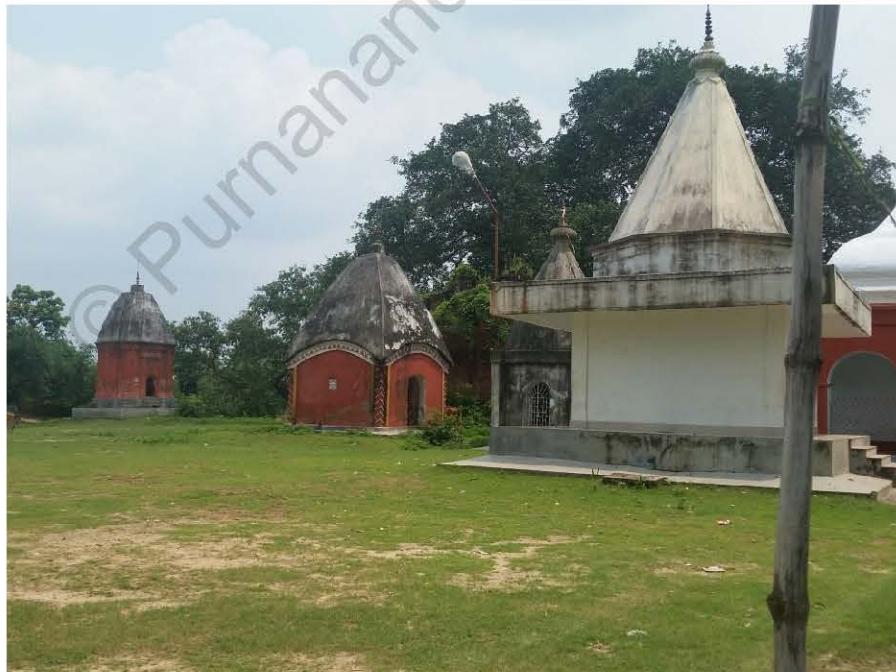
Samvarta Bhairava



Old Temple Ruins



Dilip Bhattacharya, head priest



Temple Structures around the main temple



The crown of Sati – Goddess Vimala



The face of the Goddess (3 eyes like Durga) with a nose and a protruded tongue visible in the middle of the wall representation.

For further details, read <http://www.templeadvisor.com/temples/info/10965>

## श्री दुर्गा अष्टोत्तर शतनाम स्तोत्रम्

॥ श्री दुर्गायै नमः ॥

शतनाम प्रवक्ष्यामि शृणुष्व कमलानने ।  
यस्य प्रसादमात्रेण दुर्गा प्रीता भवेत् सति ॥ १

ॐ सती साध्वी भवप्रीता भवानी भवमोचनी ।  
आर्या दुर्गा जया चाद्या त्रिनेत्रा शूलधारिणी ॥ २

पिनाकधारिणी चित्रा चंद्रघण्डा महातपाः ।  
मनो बुद्धिरहङ्कारा चित्तरूपा चिताचितिः ॥ ३

सर्वमन्त्रमयी सत्ता सत्यानन्दस्वरूपिणी ।  
अनन्ता भावनी भाव्या भव्याभव्यसदागतिः ॥ ४

शाम्भवी देवमाता च चिन्तारन्तप्रियासदा ।  
सर्वविद्या दक्षकन्या दक्षयज्ञविनाशिनी ॥ ५

अपर्णनिकवर्णा च पाटला पाटलावती ।  
पट्टाम्बरपरीधाना कलमञ्जीररञ्जनी ॥ ६

अमेयविक्रमाकूरा सुन्दरी सुरसुन्दरी ।  
वनदुर्गाच मातङ्गी मतङ्ग मुनिपूजिता ॥ ७

ब्राह्मी माहेश्वरी चैन्द्री कौमारी वैष्णवी तथा ।  
चामुण्डा चैव वाराही लक्ष्मीश्च पुरुषाकृतिः ॥ ८

विमलोत्कर्षिणी ज्ञाना क्रिया नित्या च बुद्धिदा ।  
बहुला बहुलप्रेमा सर्ववाहन वाहना ॥ ९

निशुम्भशुम्भहननी महिषासुरमर्दिनी ।  
मधुकैटभहन्त्री च चण्डमुण्डविनाशिनी ॥ १०

सर्वासुरविनाशा च सर्वदानवधातिनी ।  
सर्वशास्त्रमयी सत्या सर्वास्त्रधारिणी तथा ॥ ११

अनेकशस्त्रहस्ता च अनेकास्त्रस्य धारिणी ।  
कुमारी चैककन्या च कैशोरी युवती यतिः ॥ १२

अप्रौढा चैव प्रौढा च वृद्धमाता बलप्रदा ।  
महोदरी मुक्तकेशी घोररूपा महाबला ॥ १३

अग्निज्वाला रौद्रमुखी कालरात्रीस्तपस्विनी ।  
नारायणी भद्रकाली विष्णुमाया जलोदरी ॥ १४

शिवदूती कराली च अनन्ता परमेश्वरी ।  
कात्यायनी च सावित्री प्रत्यक्षा ब्रह्मवादिनी ॥ १५

य इदं प्रपठेन्नित्यं दुर्गानामशताष्टकम् ।  
नासाध्यं विद्यते देवि त्रिषु लोकेषु पार्वति ॥ १६

धनं धान्यं सुतं जायां हयं हस्तिनमेवच ।  
चतुर्वर्गं तथा चान्ते लभेन्मुक्तिं च शाश्वतीम् ॥ १७

कुमारीं पूजयित्वा तु ध्यात्वा देवीं सुरेश्वरीम् ।  
पूजयेत् परया भक्त्या पठेन्नामशताष्टकम् ॥ १८

तस्य सिद्धिर्भवेद्देवि सर्वेस्सुरवरैरपि ।  
राजानो दासतां यान्ति राज्यश्रियमवाप्नुयात् ॥ १९

गोरोचनारक्तकुङ्कुमेव सिन्धूरकपूरमधुन्नयेण ।  
विलिख्य यन्त्रं विधिना विधिज्ञो भवेत्सदा धारयतेपुरारिः ॥ २०

भौमावासिन्यानिशामग्रे चन्द्रे शतभिषाङ्गते ।  
विलिख्य प्रपठेत्स्तोत्रं स भवेत्सम्पदां पदम् ॥ २१

॥ इति श्री दुर्गा अष्टोत्तर शतनामस्तोत्रम् समाप्तम् ॥

## सदा विद्याजुसंहतिः

1. Can you please list out the weapons (astra) used by Bhaṇḍāsura and the counter weapon by Śrī Lalitā?

| <u>astra by Bhaṇḍāsura</u>   | <u>Śrī Lalitā's pratyashastra</u>  |
|--|--|
| andhatāmiśrāstra (complete darkness)   | Mahātāriṇi astra   |
| pāṣāṇḍāstra (atheism)  | gāyatrīyastra  |
| andhāstra (Blindness)  | cakṣuṣmatyāstra  |
| śaktināśāstra (Impotency)  | gandharvarājā visvāvasu astra  |
| andhakāstra (death)  | mṛtyuñjayāstra   |
| sarva-smṛtināśāstra (forgetfulness)  | Śrutidhāranāstra   |
| bhayāstra (Fear)   | abhayañkaraindrāsatra  |
| Mahārogāstra (diseases)  | nāmatrayāstra  |
| āyurnāśāstra (shortening of life)  | kālasamkarṣinyāstra  |
| mahāsurāstra (Many demons like madhu, kaitabha, mahiṣasura, śumbha, niśumbha, raktabīja emerged) | Mahādurgāstra (the eighteen armed Mahālakṣmi emerged , and destroyed the demons. |
| Mūkāstra (causing dumbness)  | vagvādinyastra   |

| <u>Bhaṇḍāsura created ausras by</u>  | <u>Śrī Lalitā vanquished them by creating</u>              |
|--|--|
| Vedataskara somakastra (Theft of Veda)   | Mastyāvatāra mūrti from Right thumb nail                   |
| arṇavāstra (deluge)  | Kūrmāvatāra mūrti from right index finger nail             |
| hiranyākṣāstra   | Varāhavatāra mūrti from right middle finger nail           |
| hiranyakāśipuvāstra  | Nṛsimhāvatāra mūrti from right ring finger nail            |
| mahābalīndrāstra   | Vāmanāvatāra mūrti from right small finger nail            |
| haihayāstra  | Paraśurāmavatāra mūrti from left thumb nail                |
| Bhaṇḍāsura knit his eyebrows and roared “hum”, out of which rāvaṇa, kumbhakarṇa, indrajīt and other demons emerged | Rāmāvatāra mūrti with Lakṣmaṇa from left index finger nail |
| dvividāstra (a host of monkeys)  | Balarāmāvatāramūrti from left middle finger nail           |
| rājāsurāstra (a group of evil kings)   | Kṛṣṇāvatāramūrti from left ring finger nail                |
| kalyastra  | Kalkyavatāra mūrti from left small finger nail             |

Having done these heroic deeds the ten avatāramūrtis were commanded by Śrī Lalitā to reside in Śrī Vaikunṭā and re-enact them every Yuga.

Then Bhaṇḍāsura sent a mahāmohakāstra (causing delusion) which was countered by Śrī Lalitā's sāMbhavāstra. Śrī Lalitā sent nārāyaṇāstra that destroyed his army and with Pāśupatāstra his forty commanders.

Bhaṇḍāsura, who was alone, was now consumed by the Mahākāmeśvarāstra sent by Śrī Lalitā; the fire from this astra also reduced to ashes the city of Bhaṇḍa called as śūnyaka. Then Śrī Lalitā devi showered her compassionate glance on the ashes to resurrect manmatha.

All the subtle forms of the above astra mantras are found in the raśmi mālā chanted by the Śrī Vidyopāsakās in the bedside early morning ritual.

These details are seen in a concise manner in Lalitā sahasranāma.

## **2. One of the five parvA days of naimittika is mAṣa saMkranaNa. If the saMKramaNa occurs in nights or early mornings how to perform the saparya?**

According to astrology the samkramana occurs at a particular minute, so it is difficult to pin point the time for saparya, there are vyAptis- time slots before and after each mAṣa saMkranaNa said there in (astrology), it can be seen in the following table.

| Min   | Purva vyapti<br>(nazhikai) | Masa      | Uttara<br>vyapti<br>(nazhikai) | Hours . |
|-------|----------------------------|-----------|--------------------------------|---------|
| 4.00  | 10                         | mesha     | 10                             | Min     |
| 6.24  | 16                         | rishabha  | **                             | 4.00    |
| **    | **                         | mithuna   | 16                             | **      |
| 12.00 | 30                         | kataka    | **                             | 6.24    |
| 6.24  | 16                         | simha     | **                             | **      |
| **    | **                         | kanya     | 16                             | 6.24    |
| 4.00  | 10                         | tula      | 10                             | 4.00    |
| 6.24  | 16                         | vṛischika | **                             | **      |
| **    | **                         | dhanur    | 16                             | 6.24    |
| **    | **                         | makara    | 24                             | 9.36    |
| 6.24  | 16                         | kumba     | **                             | **      |
| **    | **                         | meena     | 16                             | 6.24    |

We can choose a time which falls in the above time slot for the naimittika saparya of mAṣa saMkranaNa. If it coincide with the nitya saparya of the daytime, then the Avarana pooja is done a second time after offering small naivedya at the end of the first round. The special offerings are to me made at the end of second avarana pooja . Else, do the prayascitta of 108 japa for the nitya saparya and perform the special naimittika arcana.

என்னா யிரத்தாண்டு யோகம் இருக்கினும்  
கண்ணார் அமுதினைக் கண்டறி வாரில்லை  
உண்ணாடிக் குள்ளே ஒளியற நோக்கினால்  
கண்ணடி போலக் கலந்துநின் றானே

- திருமந்திரம் 603



Eight thousand years of yOgA dear  
Might not take you to Her near  
Light you seek within you clear  
Right like mirror you merge full gear